

सिद्धिदायक शिष्यजन परिपाल परमा। शुद्धात्मा सुगुण सांद्र सुख
वारिदि।

निद्ररहितनिद्रा रमण निर्विकार।

चिद्धेह सर्वकाल सुंदर सार-।

पद्मसंभव बलि प्रक्षालित पाद महा

हृद्रोग नाश वैकुंठवास।

विद्यातीत विश्वनाटक नारायणा।

विद्य उद्धारक उददि सद्ना।

सिद्धादि विनुत संतत पाताळवासि।

बुद्धि विशाल महिम पापहारि।

कध्योत वर्ण सकल व्याप्ता आकाश अमित।

बद्ध विच्छेद नाना रूपात्मका।

अद्वैत काया मायारमण राजीवनेत्रा।

अद्वय अनादि पुरुषा चित्र।

कर्दम मुणिसूनु विजय विठ्ठल कपिल ।

निर्दोष करुणाब्धि सर्वरादारि॥१॥

आदि मन्वंतरदि जनिसिद महदैव।

आदि पर बोम्म बोमनय्य जीया।

साधु जनर प्रिय संतत मुनितिलका।

भोदा शरीर भकुतर मनोहर हरि।

माधव सिरि विजय विठ्ठल विमलेशा।
मोदमति कोडुव कपिल भगवन्मूर्ति॥२॥

घन महिम घौणांडदोलगे लीलेयिंद।
जनिसि मेरेदे बिंदु सरोवरदल्लि।
मिनुगुव द्वयहस्त अप्राकृत काया।
इननंते ओप्पुव शिरोरुहवो।
कनक पुथ्थलियंते कांति त्रिभुवनक्के
अनवरत तुंबि सुसुतलिदको।
जननि देवहुतिगे उपदेशवनु माडि।
गुण मोदलाद तत्वव तिलिसिदे।
तनुविनोलगे नीने तिलिदु तिलिदे नित्य।
जनरन्न पालिसुव कपिलाख्यने।
अनुदिनदि निन्न ध्यानव माडि मणियिंद।
येनिसुव सुजनक्के ज्यान कोडुवे।
एणेगाणे निन्न लोचनद शक्तिगे सगर।
जनप नंदनरन्नु भंगिसिदे।
अनुमानविदकिल्ल निन्न नंबिद मूढ-।
मनुजनिगे मह पदवि बरुवदैय्य।
मुनि कुलोत्तम कपिल विजयविठ्ठलरेय।
एनेगे योगमार्ग तोरु तवकदिंद॥३॥

कपिल कपिलयेंदु प्रातःकालदलेद्दु।
सपुत सारिगेलि नुडिद मनवनिगे।
अपजय मोदलाद क्लेशगळोंदिल्ला।
अपरिमित सौख्य अवन कुलकोटिगे।
गुपुत नामविदु मनदोळगिडुवदु।
कपट जीवरु इतनु ओब्ब रिशि एंदु।
तपिसुवरु काणो नित्य नरकदल्लि।
क्रिपणवत्सल नम्म विजयविठ्ठल रेया।
कपिलावतारनु बल्लवगे बलु सुलभ॥४॥

बल हस्तदल्लि यज्य शालेयल्लि कं-
गल कप्पिनल्लि हृदय स्तान नाभियल्लि।
जलदि गन्गासंगमदल्लि गमनदल्लि।
तुलसिपत्रदल्लि तुरग तुरुविनल्लि।
मलगुव मनेयल्लि नैवेद्य समयदल्लि।
बलुकर्म बंदगलु मोचकवागुवल्लि।
चेलुवनादवनल्लि विद्य पेलुवनल्लि।
फलदल्लि प्रतिकूल इल्लद स्थलदल्लि।
बेलेद दर्भगळल्लि अग्नियल्लि हरिव।
जलदल्लि जांबुनद नदियल्लि श्लोकदल्लि।

बलिमुख बलगदल्लि आचार शीलनल्लि।
घल्लिगे आरंभदल्लि पश्चिम भागदल्लि।
पोलेव मिंचिनल्लि बंगारदल्लि इनितु
काल कालक्के बिडदे स्मरिसु कपिल परमात्मन्न।
गेलुवुंटु निनगेलवो सम्सारदिंद वेग।
कलियुगदोळगिद कांडाडिदवरिगे।
खळर अंजिकेयिल्ल निंदल्लि शुभयोग।
बलवैरि नुत नम्म विजयविठ्ठल रेय।
इळेयोळगे कपिलावतारनागि नम्म भारवहिसुव॥५॥

तम परिच्चेद ईतन स्मरणे नोडु ह।
त्कमलदोळगे विजयविठ्ठलन्न चरणाब्जा॥६॥